दैनिक सवेरा टाइम्स
अंधेरे से उजाले की ओर...

Date: 10.04.2024

दुनियां के तमाम कैलेंडर किसी न किसी रूप में भारतीय हिंदू कैलेंडर का ही अनुसरण करते हैं : प्रो. सीताराम व्यास

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में धूमधाम से मनाया भारतीय नव वर्ष

कार्यक्रम का शुभारंभ करते मुख्यातिथि। (दाएं) कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन करते मुख्यातिथि व अन्य गणमान्य लोग।

सवेरा न्यूज/नरेंद्र

जींद, 9 अप्रैल : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद, हरियाणा प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को भारतीय नववर्ष विक्रम संवत्सर 2081 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की पावन वेला में स्वागत नवागत उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि और मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ राष्ट्रवादी चिंतक प्रोफेसर सीताराम व्यास ने शिरकत की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला डा. धर्मदेव विद्यार्थी रहे।

हिंदू नववर्ष को भी मनाने के पीछे भी विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक कारणों के साथ-साथ पूर्णतया वैज्ञानिक आधार स्वयं प्रकृति में ही मौजूद हैं। पौराणिक मान्यता है कि बसंत ऋतु का आगमन भारतीय नववर्ष के साथ ही होता है। कार्यक्रम के मुख्यातिथि और मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ राष्ट्रवादी चिंतक प्रोफेसर सीताराम व्यास ने कहा कि भारतीय हिंदू कैलेंडर की गणना सूर्य और चंद्रमा के अनुसार होती है। दुनियां के तमाम कैलेंडर किसी न किसी रूप में भारतीय हिंदू कैलेंडर का ही अनुसरण करते हैं। भारतीय पंचांग और काल निर्धारण का आधार विक्रम संवत ही है। जिसकी शुरूआत मध्य प्रदेश की उज्जैन नगरी से हुई। यह हिंदू कैलेंडर राजा विक्रमादित्य के शासन काल में जारी हुआ था तभी इसे विक्रम संवत के नाम से भी जाना जाता है। विक्रमादित्य की जीत के बाद जब उनका राज्यारोहण हुआ तब उन्होंने अपनी प्रजा के तमाम ऋणों को माफ करने की घोषणा करने के साथ ही भारतीय कैलेंडर को जारी किया इसे विक्रम संवत नाम दिया गया। यही नहीं यूनानियों ने नकल कर भारत के इस हिंदू कैलेंडर को दुनियां के अलग-अलग हिस्सों में फैलाया। भले ही आज दुनिया भर में अंग्रेजी कैलेंडर का प्रचलन बहुत अधिक हो गया हो लेकिन फिर भी भारतीय कैलेंडर की महत्ता कम नहीं हुई। डा. धर्मदेव विद्यार्थी ने कहा कि अपनी संस्कृति संस्कारों का अनुसरण करना रुढ़िवादिता नहीं। बल्कि यह तो वह बहुमूल्य धरोहर है जिससे एक तरफ पूरा विश्व सीख रहा है। अपने धर्म व संस्कृति के उत्सवों को मनाने का सभी में लगाव होना चाहिए। हमारे महापुरुषों व वीर योद्धाओं ने धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए बहुत बलिदान दिया है क्या वह बलिदान इसलिए ही दिया था की एक दिन हम अपनी संस्कृति व धर्म को ही भूल जाएं। अभी भी समय है सभी को मिल-जुलकर ऐसा प्रयास करना चाहिए जिससे विश्व में हमारी संस्कृति का एक ऐसा संदेश जाए कि हम भारतीय अपनी संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए एकजुट हैं। कार्यक्रम की संरक्षिका और विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रोफेसर लवलीन मोहन ने बताया कि हम सब अपनी संस्कृति को अपनाते हुए अपने सभी उत्सवों, त्योहारों को धूमधाम से मनाएं और आपसी भाईचारे व प्रेम को विश्वभर में ले जाएं, यही हमारी संस्कृति है। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक और विश्वविद्यालय के कुलपति डा. रणपाल सिंह ने भारतीय नववर्ष की सबको बहुत-बहुत बधाई देते हुए कहा कि आप सब जानते हैं कि हमारी प्राचीन एवं गौरवशाली संस्कृति का विश्वभर में अपना एक बेहद महत्वपूर्ण और विशेष सम्मानजनक स्थान हमेशा से रहा है। कार्यक्रम के संयोजक प्रोफेसर एस.के. सिन्हा ने कहा कि भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। जिसमें विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत शामिल है। डा. मनोज भारत ने स्वागत नवागत उत्सव की प्रस्तावना को विस्तार से दर्शकों के सामने रखते हुए भारतीय संस्कृति के संदर्भों को स्पर्शित किया और कहा कि भारतीय संस्कृति विश्वव्यापी है और सर्वोपरि स्थान बनाने की ओर निरन्तर अग्रसर है। मंजू मानव द्वारा लिखित ह्यअतीत डोरह्न पुस्तक का और डॉ. अनुपम भाटिया एवं डॉ. स्नेहा द्वारा लिखी गई ह्यए नॉवल मॉडल का इन्फ्लुएंस मैक्सिमाइजेशन : ए बिजनेस इंटेलिजेंस एप्रोचह्न पुस्तक का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर एस के सिन्हा, डॉ. मंजुलता, डॉ. सुनील फोगाट, डॉ. आनन्द मलिक, डॉ. अजमेर सिंह, डॉ. विशाल वर्मा, डॉ. अनुपम भाटिया, डॉ. कुलदीप नारा, डॉ. मनोज भारत, डॉ. क्यूटी, डॉ. जगदीप शर्मा राही, पुष्पलता आर्य, विकास यशकीर्ति, मंजू मानव, डॉ. जयपाल सिंह राजपूत, डॉ. वीरेंद्र कुमार तथा डॉ. सुमन पूनिया आदि को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अमर उजाला

Date: 10.04.2024

सनातन संस्कृति ने हमें संस्कारों की जड़ों से बांधकर रखा : कुलपति

विवि में नव संवत्सर 2081 का स्वागत नवागत उत्सव मनाया

संवाद न्यूज एजेंसी

जींद। सीआरएसयू एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद हरियाणा प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय नववर्ष विक्रम संवत्सर 2081 की पावन वेला में स्वागत नवागत उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक और विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रणपाल सिंह ने भारतीय नववर्ष की बधाई दी।

कुलपति ने कहा कि हमारी प्राचीन एवं गौरवशाली संस्कृति का विश्वभर में महत्वपूर्ण स्थान है। आज के दिखावे वाले व्यावसायिक दौर में जब पैसे व बाजार की ताकत के बलबूते दुनिया में पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करने वाला बहुत तेजी से प्रायोजित माहौल बनाया जा रहा है, तब हमारी संस्कृति पूरे संसार में एक विशेष पहचान रख रही है। हमारी सनातन संस्कृति हम सबको एकजुट करके अपने रिश्ते-नाते व संस्कारों की प्राचीन जड़ों से बांधकर रखे हुए है। मुख्यातिथि प्रोफेसर सीताराम व्यास ने कहा कि भारतीय हिंदू कैलेंडर की गणना सूर्य और चंद्रमा के अनुसार होती है। दुनिया के तमाम कैलेंडर किसी न किसी रूप में भारतीय हिंदू कैलेंडर का ही अनुसरण करते हैं।

डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी ने कहा कि अपनी संस्कृति संस्कारों का अनुसरण करना रूढ़िवादियता नहीं, बल्कि यह तो वह बहुमूल्य धरोहर है जिससे एक तरफ पूरा विश्व सीख रहा है। अपने धर्म व संस्कृति के उत्सवों को मनाने का सभी में लगाव होना चाहिए। इस अवसर पर कार्यक्रम की संरक्षिका और विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रोफेसर लवलीन मोहन, प्रोफेसर एसके सिन्हा ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन करते हुए। संवाद

दैनिक जागरण

Date: 10.04.2024

अपनी संस्कृति को सहेज कर रखें

सीआरएसयू में नववर्ष विक्रम संवत्सर 2081 पर स्वागत नवागत उत्सव का आयोजन

जागरण संवाददाता, जींद : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय और अखिल भारतीय साहित्य परिषद हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को भारतीय नववर्ष विक्रम संवत्सर 2081 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की पावन वेला में स्वागत नवागत उत्सव का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक एवं वीसी डा. रणपाल सिंह ने कहा कि हमारी प्राचीन एवं गौरवशाली संस्कृति का विश्वभर में अपना एक बेहद महत्वपूर्ण और विशेष सम्मानजनक स्थान हमेशा से रहा है। आज दिखावे वाले व्यावसायिक दौर में जब पैसे व बाजार की ताकत के बलबूते दुनिया में पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करने वाला बहुत तेजी से प्रायोजित माहौल बनाया जा रहा है। उस वक्त भी हमारी संस्कृति पूरे संसार में एक विशेष पहचान रखती है। सनातन संस्कृति हम सबको एकजुट करके अपने रिश्ते-नाते व संस्कारों की प्राचीन जड़ों से बांधकर रखे हुए हैं। विशिष्ट अतिथि हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला के निदेशक डा. धर्मदेव विद्यार्थी ने कहा कि अपनी संस्कृति संस्कारों का अनुसरण करना रूढ़िवादिता नहीं। बल्कि यह तो वह बहुमूल्य धरोहर है, जिससे एक तरफ पूरा विश्व सीख रहा है। अपने धर्म व संस्कृति के उत्सवों को मनाने का सभी में लगाव होना चाहिए। कार्यक्रम की संरक्षिका एवं रजिस्ट्रार प्रो. लवलीन मोहन ने कहा कि हम सब अपनी संस्कृति को अपनाते हुए अपने सभी उत्सवों, त्योहारों को धूमधाम से मनाएं। इस अवसर पर प्रो. एसके सिन्हा, डा. मंजु रेढू, डा. मंजुलता, डा. सुनील फोगाट उपस्थित रहे।

सीआरएसयू में कार्यक्रम में उपस्थित स्टाफ व गणमान्य व्यक्ति। ● सौ. विवि

अनुपम भाटिया की पुस्तक का विमोचन: मंजू मानव द्वारा लिखित अतीत डोर पुस्तक और डा. अनुपम भाटिया व डा. स्नेहा द्वारा लिखी गई ए नावेल माडल का इन्फ्लुएंस मैक्सिमाइजेशन : ए बिजनेस इंटेलिजेंस अप्रोच पुस्तक का विमोचन किया गया। यह पुस्तक डा. अनुपम भाटिया और डा. स्नेहा के शोध पर बिजनेस इंटेलिजेंस का एक माडल प्रस्तुत करती है। यह शोध अंतर्विषयी है। इसमें प्रबंधन, वाणिज्य एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का समायोजन है। यह माडल अन्य व्यापारिक प्रतिष्ठानों के लिए भी उपयोगी होगा।

राजकीय महाविद्यालय में किया हवन यज्ञ

संवाद सूत्र, सफीदों : हिंदू नववर्ष पर सोमवार को राजकीय महाविद्यालय में हवन किया गया। इसमें मुख्य यजमान प्राचार्या डा. तनाशा हुड्डा रही। महाविद्यालय के प्रो. डा. जयविंद्र शास्त्री ने वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच हवन में आहुति डालकर देश व समाज की सुख-समृद्धि की कामना की। कालेज उप प्राचार्य डा. प्रदीप शर्मा ने कहा कि आज के दिन ही ब्रह्मा ने उत्तर वेदी कुरुक्षेत्र में यज्ञ द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति की थी। आज ही श्रीराम और युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था और आज के दिन ही ऋतु परिवर्तन एवं प्रकृति में नूतन संचार होता है। डा. तनाशा हुड्डा ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से भारतीय संस्कृति पुष्ट होती है और विद्यार्थियों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इस मौके पर डा. अंजू शर्मा, डा. रुचि भारद्वाज, मंजू व सरबजीत कौर उपस्थित रही।

दैनिक भास्कर
ई-पेपर

Date: 10.04.2024

हमारी प्राचीन एवं गौरवशाली संस्कृति का हमेशा से रहा है विश्व भर में महत्वपूर्ण स्थान : डॉ. रणपाल सिंह

जींद | सीआरएसयू एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद हरियाणा प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय नववर्ष विक्रम संवत्सर के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कुलपति डॉ. रणपाल सिंह ने कहा कि हमारी प्राचीन एवं गौरवशाली संस्कृति का विश्व भर में अपना महत्वपूर्ण और विशेष सम्मानजनक स्थान हमेशा से रहा है। पौराणिक मान्यता है कि बसंत ऋतु का आगमन भारतीय नववर्ष के साथ ही होता है। बसंत में पेड़-पौधे नए फूल और पत्तियों से लद जाते हैं। इसी समय किसानों के खेतों में फसल पककर तैयार होती है। चारों ओर बसंत ऋतु में जीवन की नवीनता दिखाई देने लगती है। ऐसे में प्रकृति भी हिंदू नववर्ष का स्वागत करती हुई प्रतीत होती है। इस अवसर पर प्रोफेसर एसके सिंहा, डॉ. मंजुलता, डॉ. सुनील फोगाट, डॉ. आनंद मलिक, डॉ. अजमेर सिंह, डॉ. विशाल वर्मा, डॉ. अनुपम भाटिया, डॉ. कुलदीप नारा, डॉ. मनोज भारत, डॉ. क्यूटी, डॉ. जगदीप शर्मा राही, पुष्पलता आर्य, विकास यश कीर्ति, मंजू मानव, डॉ. जयपाल सिंह राजपूत, डॉ. वीरेंद्र कुमार तथा डॉ. सुमन पूनिया भी मौजूद रहे।